दिनांक 20 फरवरी, 2017 (सोमवार) को माननीय कुलपति जी की अध्यक्षता में मध्यान्ह 12.00 बजे विश्वविद्यालय सभागार में सम्पन्न योजना बोर्ड की चतुर्थ बैठक का कार्यवृत्त।

बैठक में निम्न ने प्रतिभाग किया :

1.	प्रोफेसर नागेश्वर राव, कुलपति, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय, हल्द्वानी।	अध्यक्ष
2.	डॉ0 वेणुगोपाल रेड्डी, निदेशक, क्षेत्रीय सेवाएं, इन्दिरा गॉधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली।	सदस्य
3.	प्रोफेसर ओमजी गुप्ता, निदेशक, प्रबन्ध अध्ययन विद्याशाखा , उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद।	सदस्य
4.	डॉ0 एम0एन0 सिंह, समाज कार्य विभाग, इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय, इलाहाबाद	सदस्य
5.	सी0ए0 गौतम कथूरिया, लैम्डा (Lamda)14, ओमेक्स रिवेरा, रूद्रपुर।	सदस्य
6.	प्रोफेसर एच.पी. शुक्ल, निदेशक, मानविकी विद्याशाखा, उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी।	सदस्य
7.	प्रोफेसर गिरिजा प्रसाद पाण्डे, निदेशक, समाज विज्ञान विद्याशाखा, उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी।	सदस्य
8.	प्रोफेसर आर0सी0 मिश्र, निदेशक, प्रबन्ध अध्ययन एवं वाणिज्य/कुलसचिव उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी।	सदस्य सचिव
9.	श्रीमती आभा गर्खाल, वित्त नियंत्रक, उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी।	आमंत्रित सदस्य

10. डॉ0 मदन मोहन जोशी, आमंत्रित सदस्य
सहायक प्राध्यापक, इतिहास/प्रभारी प्रवेश,
उ0मु0वि0वि0, हल्द्वानी।

सर्वप्रथम कुलसचिव (सचिव योजना बोर्ड) द्वारा कुलपति (अध्यक्ष योजना बोर्ड) तथा सभी उपस्थित सदस्यों का योजना बोर्ड की चतुर्थ बैठक में स्वागत किया गया। कुलसचिव ने विशेषरूप से योजना बोर्ड की बैठक में उपस्थित बाह्य सदस्यों डॉ0 वेणुगोपाल रेड्डी, प्रोफेसर ओमजी गुप्ता, डॉ0 एम0एन0 सिंह तथा सी0ए0 गौतम कथूरिया का स्वागत किया।

तदुपरान्त कुलपति प्रोफेसर नागेश्वर राव ने बैठक में उपस्थित बाह्य सदस्यों का परिचय देते हुए उनका स्वागत किया। कुलपतिजी ने बताया कि योजना बोर्ड के सदस्य डॉ0 वेणुगोपाल रेड्डी इन्दिरा गॉधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय में निदेशक, क्षेत्रीय सेवाएं हैं जिसके अन्तर्गत 3000 अध्ययन केन्द्र तथा 57 क्षेत्रीय केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं। कुलपति जी ने डॉ0 रेड्डी के इस विश्वविद्यालय की योजना बोर्ड के सदस्य के रूप में सम्मिलित होने पर उनसे प्राप्त होने वाले दिशा-निर्देशों के प्रति यह अपेक्षा की कि वे विश्वविद्यालय के विकास में अपने अमूल्य सुझाव देंगें जिससे उनके मार्ग निर्देशन में विश्वविद्यालय का और अधिक विकास व विस्तार हो सके। कुलपतिजी के द्वारा दिये गये इस परिचय पर योजना बोर्ड के सभी सदस्यों ने हर्ष व्यक्त किया।

कुलपति जी के द्वारा दूसरे बाह्य सदस्य प्रोफेसर ओमजी गुप्ता का परिचय देते हुए उनका स्वागत किया गया। कुलपति जी ने सभी सदस्यों को अवगत कराया कि प्रोफेसर गुप्ता उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद में प्रबन्ध अध्ययन विद्याशाखा में वरिष्ठतम निदेशक हैं। प्रोफेसर गुप्ता के सुझावों और मार्गदर्शन में दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया जा सकेगा।

कुलपति जी के द्वारा योजना बोर्ड के अन्य बाह्य सदस्य डॉ0 एम0एन0 सिंह व सी0ए0 गौतम कथूरिया का परिचय देते हुए उनका स्वागत किया गया। कुलपति जी ने बताया कि डॉ0 सिंह इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय, इलाहाबाद में समाज कार्य विभाग में है जो पूर्व से ही इस विश्वविद्यालय से जुड़े हैं। डॉ0 सिंह विश्वविद्यालय में संचालित समाज कार्य व समाजशास्त्र विषय से संबंधित कार्यों के सम्पादन में समय-समय पर अपना योगदान देते रहें हैं तथा उनका मार्गदर्शन विश्वविद्यालय हित में प्राप्त होता रहा है। सी0ए0 गौतम कथूरिया का परिचय देते हुए कुलपतिजी ने अवगत कराया कि श्री कथूरिया का एकाउन्टिंग के क्षेत्र में एक जाना-माना नाम है जिनकी सेवाओं की विश्वविद्यालय में महती भूमिका है। विश्वविद्यालय के कई वित्तीय मामलों में भी श्री कथूरिया के सहयोग की अपेक्षा करते हुए उनका स्वागत किया गया।

बाह्य सदस्यों के स्वागत व परिचय के उपरान्त कुलपति जी द्वारा सभी आन्तरिक सदस्यों का स्वागत करते हुए बाह्य सदस्यों से उनका परिचय कराया गया।

योजना बोर्ड के सभी सदस्यों के परिचय के उपरान्त कुलपति जी ने सभी सदस्यों को अवगत कराया कि विश्वविद्यालय योजना बोर्ड की बैठक में पारम्परिक ढंग से चर्चा न करके सभी सदस्य अपने-अपने खुले विचार रखें ताकि दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय और अधिक विकास कर सके, अधिक सम्भावनाएं तलाश सके तथा अधिक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर सके, जिससे उत्तराखण्ड के भौगोलिक परिवेश में विद्यार्थी अधिक से अधिक लाभान्वित हो सकें।

कुलपति जी ने सभी बाह्य सदस्यों को अवगत कराया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा-निर्देशों के अनुसार राज्य सरकार द्वारा व्यक्तिगत परीक्षा जो अभी तक कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल तथा श्रीदेवसुमन

विश्वविद्यालय, बादशाहीथौल, टिहरी गढ़वाल द्वारा संचालित की जा रही थी को आगामी शैक्षणिक सत्र 2017-18 से समाप्त करते हुए दूरस्थ शिक्षा व्यवस्था के अन्तर्गत उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय को हस्तान्तरित कर दी हैं। आगामी शैक्षणिक सत्र 2017-18 से स्नातक में बी0ए0/बी0एससी0/बी0कॉम प्रथम वर्ष तथा स्नातकोत्तर में एम0ए0/ एम0एससी0/एम0कॉम प्रथम वर्ष में विद्यार्थियों का पंजीकरण इस विश्वविद्यालय में होगा। साथ ही यह भी अवगत कराया कि वर्तमान में विश्वविद्यालय में लगभग 35 हजार विद्यार्थी पंजीकृत हैं तथा व्यक्तिगत विद्यार्थियों के आने से यह संख्या लगभग 1 से 1.5 लाख तक पहुँच जायेगी जो विश्वविद्यालय के सीमित संसाधनों में बड़ी चुनौती है। सभी सदस्यों से इस पर सुझाव मांगे कि कैसे इसको और अधिक बेहतर कर सकते हैं। विश्वविद्यालय अपने विद्यार्थियों को अधिक से अधिक सुविधा उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्व है जिस क्रम में कुछ अहम बिन्दु निम्नवत् है:-

1. स्व-कार्य (assignment) का भार 40 से 20 प्रतिशत करने का प्रस्ताव है।
2. विश्वविद्यालय द्वारा संचालित सभी पाठ्यक्रमों में स्वंय की अध्ययन सामग्री तैयार की जा रही है जिस पर 80 प्रतिशत कार्य हो चुका है शेष पर कार्य तेजी से चल रहा है।
3. विद्यार्थियों की सुविधा के लिए वर्ष में दो बार प्रवेश प्रक्रिया प्रारम्भ कर दी गयी है।

कुलपति जी ने यह भी अवगत कराया कि विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की धारा 12बी के अन्तर्गत विश्वविद्यालय की मान्यता न होने के कारण एक बड़ी समस्या सामने आ रही है जिसके अन्तर्गत बनाये गये मानक पूरे न कर पाने के कारण विश्वविद्यालय का इस श्रेणी में आ पाना अभी कठिन है। धारा 12 बी के अनुसार 40 से 60 एकड़ जमीन होनी चाहिए जबकि विश्वविद्यालय के पास 25 एकड़ जमीन ही है। पारम्परिक विश्वविद्यालयों के लिए ऐसी कोई शर्त नहीं है इसलिए हम इसे संशोधित कराने का प्रयास कर रहें हैं, जिसके लिए हमें सभी के सहयोग की आवश्कयता है। विश्वविद्यालय को कई क्षेत्रों में सफलताएं प्राप्त हुई हैं जैसे-

1. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से एम0फिल0/पीएच0डी0 की मान्यता प्राप्त हो गयी है।
2. डिप्लोमा/प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम आरम्भ करने भी मान्यता प्राप्त हो गयी है।
3. मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर्गत ओ0ई0आर0 की पॉलिसी विश्वविद्यालय द्वारा बना ली गयी है।
4. महामहिम श्री राज्यपाल की अनुमति से विश्वविद्यालय द्वारा अपने प्रथम दीक्षान्त समारोह का आयोजन दिनांक 07 नवम्बर, 2016 को किया गया जिसका आयोजन सफल रहा साथ ही महामहिम द्वारा द्वितीय दीक्षान्त समारोह दिनांक 17 अप्रैल, 2017 को आयोजित किये जाने की अनुमति प्रदान की है।

कुलपति जी के बाद कुलसचिव/सचिव योजना बोर्ड ने विश्वविद्यालय के बारे में एक परिचयात्मक प्रस्तुतीकरण दिया जिसके अन्तर्गत निम्नलिखित बिन्दु उल्लेखनीय हैं:-

1. सर्वप्रथम योजना बोर्ड के कार्यों के बारे में संक्षिप्त विवरण दिया जैसे- योजना बोर्ड का मुख्य कार्य अकादमिक नियोजन, वित्तीय नियोजन, ढांचागत निर्माण कार्य, प्रशासकीय नियोजन आदि है।
2. बाह्य सदस्यों को अवगत कराया कि वर्ष 2005 में विश्वविद्यालय की स्थापना हुई तब से अब तक विश्वविद्यालय ने इतने कम समय में बहुत प्रगति की है वर्ष 2005-06 में विद्यार्थियों की संख्या मात्र 600 थी जो वर्तमान में लगभग 35 हजार हो गयी है।
3. दूरस्थ शिक्षा ब्यूरो (DEB) से ग्रान्ट नहीं मिल रही है अनुदान के नाम पर सिर्फ राज्य अनुदान ही है जिसकी राशि पर्याप्त नहीं है। विश्वविद्यालय अपने स्वंय के स्रोतों से वित्तीय स्थिति को मजबूत बनाने की कोशिश कर रहा है ताकि हम आत्मनिर्भर बन सकें।
4. तकनीकी के क्षेत्र में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय अन्य मुक्त विश्वविद्यालयों से सबसे आगे है। विश्वविद्यालय में प्रवेश, परीक्षा शुल्क, अध्ययन सामग्री, वित्त से संबंधित कार्य आदि सभी ऑनलाइन होते हैं।

5. वर्ष 2010 से अब तक विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अपनी एक अलग पहचान बनायी है जिससे सार्वजनिक तौर पर उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय को पहचान मिली है।
6. विश्वविद्यालय द्वारा रेडियो स्टेशन के माध्यम से प्रोग्राम संचालित किये जा रहें है जिसमें हर क्षेत्र की सूचनाएं प्रदान की जा रही हैं।
7. मानव संसाधन के अन्तर्गत वर्तमान में विश्वविद्यालय में 05 प्राध्यापक, 28 सहायक प्राध्यापक कार्यरत हैं, देहरादून में विश्वविद्यालय का कैम्पस स्थापित है, 08 क्षेत्रीय केन्द्र हैं जिसमें राजकीय महाविद्यालय के प्राध्यापकों को निदेशक बनाया गया है।
8. व्यक्तिगत विद्यार्थियों के आने से विद्यार्थी संख्या में काफी बढ़ोतरी होगी जिससे प्रवेश, परीक्षा एवं पाठ्य सामग्री वितरण पर बहुत दबाव बढ़ेगा विद्यार्थियों को किसी प्रकार की असुविधा न हो इसके लिए हम कठिन परिश्रम कर रहे हैं।
9. पूरे उत्तराखण्ड में तकनीकी की सुविधा अनुमन्य कराये जाने की जिम्मेदारी उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय को देते हुए शासन द्वारा आई0टी0 अकादमी की स्थापना विश्वविद्यालय में की गयी है।
10. शासन द्वारा उच्च शिक्षा विभाग के अन्तर्गत उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय को एडुसैट कार्यक्रम की समन्वयक संस्था निर्धारित करते हुए एडुसैट परियोजना का हस्तान्तरण किया गया है जिसके अन्तर्गत प्रदेश के सभी महाविद्यालय जुड़े हैं।
11. विश्वविद्यालय में आचार्य के कुल 14 पद स्वीकृत है जिसमें से 05 पद पूरित हैं तथा 09 पद रिक्त हैं, सह-प्राध्यापक के 10 पद स्वीकृत हैं, सृजित पदों के सापेक्ष वर्तमान में कोई पद पूरित नहीं है एवं सहायक प्राध्यापक के 46 पद स्वीकृत हैं जिसमें से 28 पद पूरित हैं शेष रिक्त हैं।
12. विश्वविद्यालय की स्थापना से नियोजित 08 लिपिक एवं 03 वाहन चालकों का विनियमितीकरण किया गया है।
13. शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर वर्ग में और भी बहुत से पद शासन स्तर पर स्वीकृत किये गये हैं।
14. विज्ञान के विद्यार्थियों के लिए विश्वविद्यालय को लैब की आवश्यकता है जिससे विद्यार्थियों को अन्यत्र न जाना पड़े।
15. एम0पी0डी0डी0 तथा परीक्षा हेतु और अधिक भौतिक एवं मानवीय संसाधनों की आवश्यकता विश्वविद्यालय को है।

कुलसचिव के प्रस्तुतीकरण के बाद योजना बोर्ड की कार्यसूची पर विचार करने से पूर्व बाह्य सदस्यों से विश्वविद्यालय के विस्तार एवं विकास हेतु कुलसचिव द्वारा अपने सुझाव प्रस्तुत किये जाने का अनुरोध किया गया जिसमें सदस्यों द्वारा अपने-अपने सुझाव प्रस्तुत किये गये:-

डॉ0 वेणुगोपाल रेड्डी ने सर्वप्रथम व्यक्तिगत विद्यार्थियों के उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में पंजीकृत होने पर बधाई दी तथा विश्वविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों एवं सहायक प्राध्यापकों की सराहना की कि इतने कम समय में उनके द्वारा अपनी स्वंय की पाठ्य सामग्री तैयार कर ली गयी है। विश्वविद्यालय के तकनीकी स्तर से डॉ0 रेड्डी बहुत प्रभावित हुए उन्होने अवगत कराया कि इन्दिरा गॉधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय में जिस तकनीकी पर कार्य चल रहा है वो यहॉ पर भी संचालित है।

डॉ0 रेड्डी ने सुझाव दिया कि विश्वविद्यालय में **ब्यूटी पार्लर, ब्यूटी केयर तथा सुरक्षा गार्ड की ट्रेनिंग में प्रमाण-पत्र** पाठ्यक्रम संचालित किया जा सकता है। चूंकि अब विद्यार्थियों की संख्या में बढ़ोतरी हो रही है इसलिए ये पाठ्यक्रम व्यावसायिक पाठ्यक्रम के अन्तर्गत अच्छे चलेंगे क्योंकि वर्तमान परिवेश में हर बच्चा चाहता है कि वो ऐसे पाठ्यक्रम करे जिससे उसे नौकरी मिल सके या वो खुद का कोई काम कर सके। डॉ0 रेड्डी ने यह भी कहा कि व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को ही अधिक विकसित किये जाने की आवश्यकता है। आने वाले समय में बी0ए0, एम0ए0 का महत्व नहीं रहेगा और

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों की ओर ही विद्यार्थियों का रूझान बढ़ेगा। इस पर प्रोफेसर गिरिजा प्रसाद पाण्डे ने अवगत कराया कि व्यावसायिक अध्ययन के अन्तर्गत हमने कई प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम चलाये है। ओटोमोबाइल के क्षेत्र में लगभग पॉच हजार विद्यार्थी पंजीकृत हैं जिसमें टाटा मोटर्स, अशोका ली-लैण्ड, मारूती सुजुकी जैसे नामी संस्थाओं के साथ हमने अनुबन्ध किया है जिसमें पाठ्यक्रम पूर्ण करने के पश्चात विद्यार्थी ट्रेनिंग करते है जिसमें स्टाईपिण्ड के रूप में उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को रू0 27 करोड़ प्राप्त हो चुका है। उन्होंने बताया कि हम इन पाठ्यक्रमों को और प्रभावी बनाने का प्रयास कर रहे हैं। प्रोफेसर पाण्डे ने कहा कि भविष्य की योजना में हम रेडियो प्रोडक्शन एण्ड प्रोग्रामिंग पाठ्यक्रम संचालित करने जा रह हैं। इस पर कुलपतिजी ने कहा कि हम कोशिश कर रहे हैं कि यू0जी0सी0 के दिशा-निर्देशों में संशोधन हो जिसमें तकनीकी पर आधारित पाठ्यक्रम भी संचालित किये जाने की मान्यता मिले क्योंकि आज के युग में बिना तकनीकी के काम चल पाना असम्भव है।

प्रोफेसर ओमजी गुप्ता ने सुझाव दिया कि उत्तराखण्ड के परिपेक्ष्य में पर्यटन तथा कृषि के अलावा माली का कार्य करने वालों के लिए छः माह का प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम चलाया जा सकता है जिसकी सभी ने सराहना की। प्रोफेसर गुप्ता ने यह भी सुझाव दिया कि उत्तराखण्ड योग में बहुत अधिक आगे है इसलिए इस क्षेत्र में भी विश्वविद्यालय और अच्छे पाठ्यक्रम प्रारम्भ करने का प्रयास कर सकता है।

डॉ0 एम0एन0 सिंह ने अवगत कराया कि विद्यार्थियों को व्यावहारिक ज्ञान पर आधारित पाठ्यक्रम उपलब्ध कराना उचित होगा। साथ ही उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय स्वंय प्रैक्टिकल कराये तथा समाज कार्य के साथ तकनीकी का टाई-अप करने का सुझाव दिया। डॉ0 सिंह ने कहॉ कि उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय बहुत अधिक विकसित हो रहा है तथा व्यक्तिगत विद्यार्थियों के आने से स्थिति और अधिक अच्छी हो जायेगी। डॉ0 सिंह ने विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना कि जिस पर कुलपति जी ने उन्हें अवगत कराया कि हम प्रत्येक पाठ्यक्रम के साथ तकनीकी पर ही जोर दे रहें हैं तथा नये पाठ्यक्रम आरम्भ करने के बजाय पूराने पाठ्यक्रमों को और अधिक सुदृढ़ बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

सी0ए0 गौतम कथूरिया ने कहा कि मैं विश्वविद्यालय की सभी योजनाओं और प्रगति से बहुत प्रभावित हूँ यह मेरी प्रथम बैठक है जिसमें सम्मलित होने पर मुझे बहुत अच्छा लगा। श्री कथूरिया ने कहा कि पहले नौकरी मिलना आसान था पर आज बहुत मुश्किल है इस पर मैं सुझाव देना चाहता हूँ कि बी0कॉम के **साथ डिप्लोमा इन ई-एकाउन्टिंग** पाठ्यक्रम प्रारम्भ कर सकते हैं जिसमें एकाउन्ट के साथ टैली भी सम्मिलित हो ताकि पाठ्यक्रम पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी किसी भी संस्थान में जायें तो उनको समस्त जानकारी हो। इस पर कुलसचिव ने अवगत कराया कि हमने इसमें पाठ्यक्रम बनाया है जो डेढ़ साल का पाठ्यक्रम है जिसकी यू0जी0सी0 से मान्यता नहीं है जिससे हम इसे संचालित नहीं कर पाये परन्तु अब इसमें संशोधन करके भविष्य में संचालित करेंगें।

बाह्य सदस्यों से प्राप्त सुझावों का सभी ने स्वागत किया एवं उन पर क्रियान्वयन का आश्वासन दिया**,** तत्पश्चात योजना बोर्ड की कार्यसूची पर विचार किया गया तथा निम्नवत् प्रस्ताव स्वीकार किये गये:-

प्रस्ताव संख्या-04.01- योजना बोर्ड की तृतीय बैठक दिनांक 09.09.2014 के कार्यवृत्त की पुष्टि के संबंध में।

योजना बोर्ड की **दिनांक 09.09.2014 को सम्पन्न तृतीय बैठक के** कार्यवृत्त का सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया तथा बाह्य सदस्यों द्वारा यह सुझाव दिया गया कि योजना बोर्ड की बैठक वर्ष में दो बार अवश्य बुलाई जाय जिस पर सभी ने सहमति व्यक्त की।

प्रस्ताव संख्या-04.02- योजना बोर्ड की तृतीय बैठक दिनांक 09.09.2014 के निर्णयों पर कृत कार्यवाही।

योजना बोर्ड द्वारा कृत कार्यवाही का अवलोकन किया गया तथा उस पर संतोष व्यक्त किया गया।

प्रस्ताव संख्या-04.03- योजना बोर्ड की तृतीय बैठक दिनांक 09.09.2014 से अब तक विश्वविद्यालय की प्रगति आख्या के संबंध में।

विश्वविद्यालय की प्रगति आख्या की सराहना की गयी तथा इसे विद्या परिषद तथा कार्य परिषद से भी अनुमोदित कराने का सुझाव दिया गया। राजभवन द्वारा आयोजित Toppers Conclave में विश्वविद्यालय की छात्रा कु0 आंकाक्षा की सराहना को रेखांकित किया गया। पदों का स्थायीकरण, शैक्षिक एवं शिक्षणेत्तर वर्ग में सृजित नये पदों के लिए बाह्य सदस्यों द्वारा विश्वविद्यालय को बधाई दी गयी तथा वर्ष में दो बार प्रवेश प्रक्रिया अपनाये जाने की सराहना करते हुए संस्तुति प्रदान की।

प्रस्ताव संख्या-04.04- कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल एवं श्रीदेवसुमन विश्वविद्यालय, श्रीनगर से व्यक्तिगत परीक्षा व्यवस्था समाप्त किये जाने के फलस्वरूप संबंधित विद्यार्थियों द्वारा उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय में प्रवेश लिये जाने के संबंध में।

प्रस्ताव पर विचारोपरान्त बाह्य सदस्यों ने कहा कि व्यक्तिगत विद्यार्थियों के आने से विश्वविद्यालय की जिम्मेदारियां और अधिक बढ़ गयी है जिसके लिए मानसिक तौर पर अधिक मजबूती के साथ-साथ वित्तीय मजबूती की भी आवश्यकता है। डॉ0 वेणुगोपाल रेड्डी ने सुझाव दिया कि प्रस्ताव में विश्वविद्यालय हेतु अतिरिक्त पदों की मांग में प्राध्यापक के पद कम करके सहायक प्राध्यापक के पदों में बढ़ोतरी करने से अधिक लाभ होगा। इस पर कुलपति जी ने इसकी सराहना की तथा शिक्षणेत्तर वर्ग में कनिष्ठ सहायक के पदों को बढ़ाये जाने का निर्देश दिया **(संशोधित सूची संलग्न है)**।

प्रस्ताव संख्या-04.05- विश्वविद्यालय में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिये विद्यार्थी सहायता सेवाओं को प्रभावपूर्ण बनाने के संबंध में।

प्रस्ताव का सदस्यों द्वारा अवलोकन किया गया तथा इसकी सराहना की गई।

प्रस्ताव संख्या-04.06- विश्वविद्यालय की भौतिक संरचना के अन्तर्गत कराये जाने वाले निर्माण कार्यों के संबंध में।

विश्वविद्यालय की भौतिक संरचना के अन्तर्गत कराये जाने वाले निर्माण कार्यों से बोर्ड के सदस्य अवगत हुए।

प्रस्ताव संख्या-04.07- विश्वविद्यालय में अकादमिक नियोजन-

शासन द्वारा स्वीकृत पदों एवं पूरित पद जिनकी अवधि 03 वर्ष से अधिक हो गयी है, के स्थायीकरण से संबंधित प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था जिसका योजना बोर्ड द्वारा अवलोकन किया गया।

प्रस्ताव संख्या-04.08 –विश्वविद्यालय में नियमित शिक्षणेत्तर पद-

विश्वविद्यालय हेतु शासन द्वारा शिक्षणेत्तर वर्ग में सहायक क्षेत्रीय निदेशक, कनिष्ठ सहायक, वाहन चालक, शोध अधिकारी, सहायक निदेशक, कम्प्यूटर आई0टी0 एवं सहायक कुलसचिव के सृजित पदों का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया जिसका योजना बोर्ड द्वारा अवलोकन किया गया।

शैक्षिक पद

क्रम संख्या	पाठ्यक्रम का नाम	सृजित पद			अतिरिक्त पद		
		प्राध्यापक	सह-प्राध्यापक	सहायक प्राध्यापक	प्राध्यापक	सह-प्राध्यापक	सहायक प्राध्यापक
1.	अंग्रेजी	01	-	01	-	01	01
2.	प्रबंध अध्ययन	01	-	02	-	01	-
3.	कम्प्यूटर साइंस	01	01	01	-	-	01
4.	इतिहास	01	01	01	-	-	02
5.	पत्रकारिता एवं जनसंचार	01	01	01	-	-	01
6.	शिक्षाशास्त्र	02	01	04	-	-	02
7.	वाणिज्य	01	01	02	-	-	01
8.	होटल मैनेजमेन्ट	01	-	01	-	01	-
9.	कृषि	01	-	01	-	-	-
10.	विधि	01	-	01	-	-	-
11.	मैकेनिकल इंजीनियर	01	-	-	-	-	-
12.	समाजशास्त्र	01	-	01	-	01	01
13.	राजनीति शास्त्र	01	-	01	-	01	01
14.	गणित	-	01	01	01	-	-
15.	जन्तु विज्ञान	-	01	-	-	-	01
16.	विकास अध्ययन (विषय निर्धारित नहीं किया गया है)	-	01	-	-	-	-
17.	हिन्दी	-	01	02	01	-	01
18.	अर्थशास्त्र	-	01	01	01	01	01
19.	पर्यटन	-	-	01	01	01	-
20.	वानिकी	-	-	01	-	-	-
21.	आयुर्वेद	-	-	01	-	-	-
22.	भौतिकी	-	-	03	01	01	-
23.	संस्कृत	-	-	01	01	01	01
24.	रसायन विज्ञान	-	-	03	01	01	-
25.	योग	-	-	02	01	01	01
26.	ज्योतिष	-	-	01	-	01	01

27.	समाज कार्य	-	-	01	01	01	01
28.	भूगोल	-	-	01	01	01	01
29.	वनस्पति विज्ञान	-	-	01	01	01	-
30.	मनोविज्ञान	-	-	01	-	01	-
31.	लोक प्रशासन	-	-	01	-	01	01
32.	स्कूल ऑफ वोकेशनल स्टडीज	-	-	01	-	01	01
33.	पुस्तकालय एवं सूचना/ विज्ञान/ लाइब्रेरी साइंस	-	-	02	-	-	-
34.	संगीत	-	-	01	-	01	-
35.	गृहविज्ञान	-	-	01	-	01	01
36.	उर्दू	-	-	01	01	01	-
37.	बी0एड0 (विशिष्ट शिक्षा)	-	-	01	01	01	03
	योग	**14**	**10**	**46**	**13**	**22**	**24**

शिक्षणेत्तर वर्ग के नियमित पद

क्रम संख्या	पदनाम	सृजित पद	अतिरिक्त पद	टिप्पणी
1.	उपकुलसचिव	01	02	विश्वविद्यालय में कुलपति, कुलसचिव, वित्त नियंत्रक, परीक्षा नियंत्रक, निदेशालय- क्षेत्रीय सेवायें, अकादमिक, विभिन्न विद्याशाखाओं के निदेशकों के साथ ही प्रदेश के विभिन्न स्थानों में स्थापित 08 क्षेत्रीय केन्द्रों के सुचारू एवं दक्षतापूर्वक संचालन हेतु विश्वविद्यालय में नियमित पदों का होना नितान्त आवश्यक है। तालिका में वर्णित विवरणानुसार शासन को नियमित पदों के सृजन का प्रस्ताव प्रेषित किया जाना प्रस्तावित है।
2.	सहायक क्षेत्रीय निदेशक	08	-	
3.	शोध अधिकारी	03	-	
4.	सहायक निदेशक, कम्प्यूटर आई0टी0	04	-	
5.	सहायक कुलसचिव	06	-	
6.	प्रशासनिक अधिकारी	-	03	
7.	मुख्य सहायक	-	15	
8.	प्रवर सहायक	-	15	
9.	कनिष्ठ सहायक	25	40	
10.	वैयक्तिक सहायक	01	01	
11.	आशुलिपिक	01	02	

12.	लेखाकार	01	-	
13.	सहायक लेखाकार	02	-	
14.	क्रय सहायक	01	-	
15.	कैशियर	01	-	
16.	सहायक स्टोर कीपर	01	-	
17.	लेखा लिपिक	-	05	
18.	पुस्तकालयध्यक्ष	-	01	
19.	सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	-	02	
20.	कैटलॉगर	-	02	
21.	प्रयोगशाला सहायक	-	06	
22.	परिचर	-	20	
	योग	**55**	**114**	

प्रस्ताव संख्या-04.09- विश्वविद्यालय में संचालित पाठ्यक्रम बी0एड0 (विशिष्ट शिक्षा) के संबंध में।

प्रस्ताव पर विचार-विमर्श किया गया तथा कुलसचिव ने अवगत कराया कि यू0जी0सी0 से मान्यता न मिलने के कारण **बी0एड0 (विशिष्ट शिक्षा)** पाठ्यक्रम के संचालन में समस्या उत्पन्न हो रही है इस पर बाह्य सदस्यों ने भी मत व्यक्त किया कि यू0जी0सी0 से मान्यता मिलने के बाद ही पाठ्यक्रम का संचालन किया जाय।

प्रस्ताव संख्या-04.10- महामहिम राज्यपाल/कुलाधिपति के निर्देश के अनुपालन में विश्वविद्यालय द्वारा गोद ली गई पॉच ग्राम सभाओं के संबंध में।

प्रस्ताव पर कुलसचिव ने सभी बाह्य सदस्यों को विस्तृत जानकारी दी तथा विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिये गये पॉच गांवों में से दो का अपेक्षित सहयोग नहीं मिलने के कारण गढ़वाल मण्डल के दो नये गांव मोथरोवाला एवं समल्टा गोद लिए जाने से अवगत कराया। जिसके लिए बाह्य सदस्यों ने विश्वविद्यालय की सराहना की तथा प्रोफेसर ओमजी गुप्ता व डॉ0 वेणुगोपाल रेड्डी ने सुझाव दिया कि पीएच0डी0 में पंजीकृत विद्यार्थियों को प्रोजेक्ट वर्क के रूप में एक-एक गांव दे दिया जाय जिस पर वे अपनी प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार कर प्रस्तुत करें।

प्रस्ताव संख्या-04.11- विश्वविद्यालय हेतु प्राथमिक चिकित्सालय की स्थापना किये जाने के संबंध में।

प्रस्ताव पर कुलसचिव ने अवगत कराया कि विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए गये पॉच गांव के निवासियों, पंजीकृत विद्यार्थियों तथा विश्वविद्यालय में कार्यरत कार्मिकों को प्राथमिक चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध कराये जाने के उद्देश्य से प्राथमिक चिकित्सालय की स्थापना किया जाना प्रस्तावित है, जिसकी सभी बाह्य सदस्यों ने सराहना की तथा सुझाव दिया कि समय-समय पर स्वास्थ्य शिविर, योग शिविर का भी आयोजन किया जा सकता है एवं अन्य बाह्य चिकित्सकों को बुलाकर भी अलग-अलग क्षेत्रों में परामर्श सत्र किया जा सकता है। प्रस्ताव पर श्रीमती आभा गर्खाल, वित्त अधिकारी, उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय ने सुझाव दिया कि प्राथमिक चिकित्सालय के माध्यम से गांवों में **'बेटी बचाओ'** अभियान भी चलाया जाय।

प्रस्ताव संख्या 04.12- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा शैक्षणिक सत्र 2016-17 तथा 2017-18 में विश्वविद्यालय द्वारा चलाये जाने वाले पाठ्यक्रमों के संचालन की अनुमति प्रदान किये जाने के संबंध में।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (DEB) द्वारा शैक्षणिक सत्र 2016-17 तथा 2017-18 में विश्वविद्यालय को अनुमत पाठ्यक्रमों की सूची का योजना बोर्ड द्वारा अवलोकन किया गया।

प्रस्ताव संख्या 04.13- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के दिशा-निर्देशानुसार एक वर्षीय डिप्लोमा एवं प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम संचालित किये जाने के संबंध में।

प्रस्ताव का अवलोकन कर संस्तुति की गई कि सुझाये गये नये पाठ्यक्रमों के प्रस्ताव तैयार कर विद्या परिषद में प्रस्तुत किया जाय।

प्रस्ताव संख्या 04.14- विश्वविद्यालय में आई0टी0 अकादमी स्थापित किये जाने के संबंध में।

विश्वविद्यालय में शासन की स्वीकृति के उपरान्त आई0टी0 अकादमी स्थापित किये जाने पर सभी सदस्यों ने हर्ष व्यक्त किया तथा बाह्य सदस्यों ने विश्वविद्यालय को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी। कुलसचिव ने अवगत कराया कि आई0टी0 अकादमी के सुचारू संचालन के लिए वित्तीय अनुदान की आवश्यकता है जिसके लिए ₹ 1 करोड़ 45 लाख का प्रस्ताव शासन के विचाराधीन है।

प्रस्ताव संख्या– 04.15- वित्तीय वर्ष 2016-17 में एडुसैट परियोजना हेतु धनराशि अवमुक्त किये जाने के संबंध में।

प्रस्ताव पर विचारोपरान्त कुलसचिव द्वारा अवगत कराया गया कि वित्तीय वर्ष 2016-17 में एडुसैट परियोजना के अन्तर्गत शासन द्वारा आयोजनागत पक्ष में ₹ 25 लाख तथा सहायक अनुदान मद में ₹ 16 लाख कुल ₹ 41 लाख की धनराशि विश्वविद्यालय को अवमुक्त की गयी है।

प्रस्ताव संख्या-04.16- व्यावसायिक अध्ययन विद्याशाखा के अन्तर्गत दो नवीन पाठ्यक्रम आरम्भ किये जाने के संबंध में।

विश्वविद्यालय द्वारा नवीन पाठ्यक्रम आरम्भ किये जाने की बाह्य सदस्यों ने सराहना की। सी0ए0 गौतम कथूरिया ने व्यावसायिक अध्ययन के अन्तर्गत डिप्लोमा इन ई-एकाउन्टिंग पाठ्यक्रम शामिल करने का सुझाव दिया तथा डॉ0 वेणुगोपाल रेड्डी ने कहा कि अधिक से अधिक व्यावसायिक पाठ्यक्रम शुरू किये जाय जिनकी मांग अधिक हो और आने वाले समय में जिनसे अधिक लाभ प्राप्त हो सके। प्रोफेसर गिरिजा पाण्डे ने कहा कि हम इस ओर प्रयत्नशील है परन्तु यू0जी0सी0 से पाठ्यक्रमों की मान्यता न मिलना एक बड़ी समस्या है। इस पर सभी ने मत व्यक्त किया कि भविष्य में विद्यार्थियों को कोई परेशानी न हो इसके लिए कोई भी पाठ्यक्रम बिना यू0जी0सी0 की अनुमति के प्रारम्भ न किया जाय। इसी के अनुसरण में विश्वविद्यालय ने बी0ए0 एवं बी0एससी0 एकल विषय के पाठ्यक्रमों को जनवरी सत्र 2017 से नहीं चलाने के निर्णय से अवगत कराया गया।

प्रस्ताव संख्या-04.17- विश्वविद्यालय की विगत तीन वर्षो में वित्तीय उपलब्धता तथा भविष्य के लिए वित्तीय नियोजन के संबंध में।

प्रस्ताव का अवलोकन किया गया तथा बाह्य सदस्यों को अवगत कराया गया कि वित्तीय वर्ष 2016-17 में विश्वविद्यालय में एक कॉरपस फण्ड खोला गया है जिसमें वर्तमान में 3 करोड़ की धनराशि जमा है। भविष्य की योजनाओं में स्वंय के स्रोतों से होने वाली आय से व्ययों के उपरान्त प्रतिवर्ष शेष धनराशि को कॉरपस फण्ड में जमा किया जाना प्रस्तावित है। बाह्य सदस्यों ने इसके लिए विश्वविद्यालय की सराहना की तथा वित्तीय स्थिति को और अधिक मजबूत किये जाने का सुझाव दिया।

कार्यसूची में सूचीबद्ध सभी प्रस्तावों पर विचार-विमर्श एवं संस्तुतियों के उपरांत योजना बोर्ड के सदस्य सचिव प्रोफेसर आर0सी0 मिश्र, कुलसचिव द्वारा सभी माननीय सदस्यों एवं विशेषकर बाह्य सदस्यों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सभी सदस्यों का आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

अन्त में अध्यक्ष महोदय के प्रति धन्यवाद ज्ञापित कर बैठक सम्पन्न हुई।

23/2/17

(प्रोफेसर आर0सी0 मिश्र)
कुलसचिव/ सदस्य सचिव योजना बोर्ड

अनुमोदित
नागेश्वरराव
23/2/17

Prof. Nageshwar Rao
Vice Chancellor